'डाक पंजियन सं. Jaipur city/223/2015-17
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 21 अंक 6 4 जून, 2017 कुल पृष्ठः 8 एक प्रतिः रुपए 7.00 वार्षिक : रुपए 150/-

पुष्कर तीर्थ में हुआ ग्रीष्मकालीन उच्च प्रशिक्षण शिविर

श्री क्षत्रिय युवक संघ का बालक वर्ग का ग्रीष्मकालीन उच्च प्रशिक्षण शिविर पुष्कर घाटी में स्थित स्काउट ग्राउंड में 22 मई को ध्वजावतरण एवं माननीय संघ प्रमुख श्री के विदाई संदेश के साथ संपन्न हुआ। 12 मई को प्रातः 5 बजे से प्रारम्भ हुए इस शिविर में लगभग 450 शिविरार्थियों ने 11 दिन तक क्षात्रधर्म व संस्कृति का प्रशिक्षण लिया एवं पूज्य तनसिंह जी द्वारा प्रदत्त सामूहिक संस्कारमयी कर्मप्रणाली द्वारा अभ्यास व वैराग्य के मार्ग से स्वयं के व्यक्तित्व निर्माण में संलग्न हुए। शिविर का संचालन संघ प्रमुख श्री एवं संचालन प्रमुख जी के निर्देशन में मुख्य शिक्षक लक्ष्मणसिंह बैण्यांकाबास एवं उनके सहयोगियों ने किया। शिविर की व्यवस्था का जिम्मा अजमेर प्रांत की टीम ने समाज के सहयोग से निभाया। शिविर में राजस्थान व गुजरात के साथ-साथ उत्तरप्रदेश एवं मध्यप्रदेश के स्वयंसेवक भी शामिल हुए। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली, मुम्बई, पूना, सूरत, चैन्नई, बैंगलोर आदि स्थानों पर व्यवसायरत प्रवासी राजस्थानी एवं गुजराती स्वयंसेवक भी प्रशिक्षण लेने पहुंचे। शिविर में एक दिन संघ दर्शन का कार्यक्रम रखा गया जिसमें व्यवस्था में सहयोग करने वाले समाजबंधुओं को बुलाया गया ताकि उन्हें संघ की कार्यप्रणाली को निकट से समझने का अवसर मिले। पुष्कर शहर से चार किलोमीटर दूर प्रकृति की गोद में बसे शिविर स्थल में 11 दिन तक आश्रमीय वातावरण में रहकर भीषण गर्मी, आंधी एवं फिर वर्षा आदि प्रतिकूलताओं के बीच शिविरार्थियों में पनपे दृढ़ पारिवारिक भाव का ही परिणाम था कि विदाई के समय विदाई देने वालों एवं लेने वालों की आंखें अश्रुधारा बहा रही थी। ➡ (शेष पृष्ठ 7 पर)

'जो अंकुरण हुआ है उसे पनपाए'

(संघ प्रमुख श्री का विदाई संदेश)

अभी हमने जो विदाई गीत गाया उसमें पूज्य तनसिंह जी ने कृतज्ञता भाव को प्रकट करते हुए कहा है कि तुम्हारे सहयोग के बिना कुछ संभव नहीं है, यह उनका कृतज्ञता भाव है। संघ के सृष्टा, निर्माता एवं अधिष्ठाता तनसिंह जी भी हमारे सहयोग के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर रहे हैं और इन ग्यारह दिनों में आप सब में भी ऐसे ही कृतज्ञता भाव का अंकुरण हुआ है। उनकी चाह है कि यह अंकुरण कहीं मुरझा नहीं जाए इसलिए वे कहते हैं कि 'पनपे ये पौधे कहीं टूट जाएं, यह सह नहीं सकता।' हम भी इस अंकुरण की गंभीरता को समझें, इसे पनपाए और सहेजें। आप सभी ने इन दिनों में उस आश्रमीय वातावरण को अनुभव किया है जिसमें प्राचीन ऋषि मुनियों द्वारा अपने शिष्यों के व्यक्तित्व का गठन किया जाता था। पुष्कर तीर्थ तपोभूमि है, तीर्थराज है जहां आकर लोग अपनी मलीनता को धोते है और निर्मल होकर जाते हैं, आप सभी ने भी इन ग्यारह दिनों में इस प्रक्रिया का अनुभव किया है। आप सभी को आज जाना पड़ेगा संसार के घर गृहस्थी के कामों के लिए लेकिन हमारे में जो कृतज्ञता का अंकुरण हुआ है वह हमारी कौम का अंकुरण है और यह कौम अपने लिए नहीं पूरी मानवता के लिए जीने वाली कौम है इस बात को सदैव स्मरण रखें। ➡ (शेष पृष्ठ 2 पर)

'पर्यायवाची हैं आर्य, सनातन और हिन्दू शब्द'

प्रायः यह कहा जाता है कि हिन्दू कोई धर्म नहीं बल्कि जीवनशैली है। इस प्रकार की चर्चा राजनीति से प्रेरक लोग प्रायः अधिक किया करते हैं। जबकि वर्षों से अपने आपको आर्य या सनातन धर्मी कहने वाले लोग धर्म के स्थान पर हिन्दू शब्द का उपयोग करते हैं। ऐसे में क्या हिन्दू कोई धर्म नहीं बल्कि मात्र जीवन यापन की शैली है? इसी विषय पर 21 मई रविवार को नई दिल्ली की अशोक रोड़ पर आंध्रप्रदेश भवन के सामने एक सत्संग का आयोजन परमहंस स्वामी श्री अड़गड़ानंद जी महाराज के सानिध्य में हुआ जिसमें सुप्रीम कोर्ट के वकीलों, मीडिया जगत के वरिष्ठ पत्रकारों सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे। उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए स्वामी जी ने कहा कि आर्य धर्म, सनातन धर्म या हिन्दू धर्म आपस में पर्यायवाची शब्द हैं। जो एक परमात्मा के सिवाय किसी अन्य के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करता और उस एक परमात्मा के प्रति निष्ठावान रहता है वह आर्य है। उस परमात्मा को प्राप्त करने की नियत विधि का आचरण आर्य धर्म है। उसे विदित कर लेना ही आर्यत्व है। इसी प्रकार आत्मा, परमात्मा, ईश्वर ये सब पर्यायवाची शब्द हैं। भगवान कृष्ण के अनुसार आत्मा ही सनातन है। ऐसे में जो इस सनातन आत्मा के प्रति श्रद्धावान है वही सनातन धर्मी है। इसी सनातन आत्मा, परमात्मा या ब्रह्म को जानने की विधि सनातन धर्म है। इसी प्रकार गीता कहती है कि वह सनातन आत्मा सभी प्राणियों के हृदय में रहता है। उस ज्योतिर्मय हृदयस्थ ईश्वर की शरण में जाना ही हिन्दू धर्म है। इस प्रकार हिन्दू शब्द ईश्वर के निवास स्थान का परिचायक है। ➡ (शेष पृष्ठ 2 पर)

'बालिका प्रशिक्षण शिविर चित्तौड़गढ़ में'

युवाओं के उच्च प्रशिक्षण शिविर के बाद 25 मई से 31 मई तक बालिकाओं का सात दिवसीय ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर चित्तौड़गढ़ के गांधीनगर में विद्या निकेतन उमावि में संपन्न हुआ। शिविर में राजस्थान, गुजरात, उत्तरप्रदेश एवं मध्यप्रदेश की 340 बालिकाओं ने प्रशिक्षण लिया। संघ के महिला प्रकोष्ठ के प्रभारी जोरावरसिंह भादला के निर्देशन में शिविर का संचालन रश्मि कंवर देलदरी, उर्मिला बा पच्छेगांव, उषा कंवर पादोदा, संतोष कंवर सिसरवादा, कल्पना कंवर सिंघाणा, लक्ष्मी कंवर खारड़ा, रतन कंवर सेतरावा आदि महिलाओं ने किया। शिविर में क्षात्र संस्कारों के सृजन हेतु उपयुक्त आचार-विचार का प्रशिक्षण दिया गया। प्रातःकालीन खेल सत्र में आत्म सुरक्षा के गुर भी सिखाए गए। शिविर के प्रारम्भ में चित्तौड़गढ़ किले का भ्रमण करा उसके इतिहास से अवगत करवाया गया। शिविरार्थियों को दो दिन माननीय संघ प्रमुख श्री का सानिध्य भी मिला। ➡ (शेष पृष्ठ 3 पर)

हमारे गांव हमारी जड़

राजपूत की पहचान उसके गांव से होती है। आजकल व्यवसाय, शिक्षा आदि आवश्यकताओं के कारण गांव छोड़कर शहरों में रहने वाले राजपूत परिवारों की नई पीढ़ी अपनी इस पहचान से अनभिज्ञ होती जा रही है। गांवों से कटना एक प्रकार से अपनी जड़ों से कटना है क्यों कि हमारी वंश वृक्ष की जड़ों की ओर जाने पर हमें ज्ञात होता है कि हमारे ही किसी पूर्वज ने उस गांव का रक्षण, पोषण किया है जिसे हम अपना गांव कहते हैं। ऐसे में हमारी जड़ों के प्रतीक उस गांव को जान सकें इसके लिए पथ प्रेरक के 20वें वर्ष के प्रवेश के साथ ही एक नया स्तंभ शुरू गया है - **'हमारे गांव-हमारी जड़ I'** इसमें श्रृंखलाबद्ध रूप से प्रति अंक एक गांव का परिचय छापा जा रहा है। इस बार प्रस्तुत है झुंझुनूं जिले की चिडावा तहसील के गांव सुलताना की कहानी।

शेखावाटी का राजपूत बहुल गांव : सुलताना

गांव स्थित पुरानी कोटड़ी

झुंझुनूं जिले की चिड़ावा तहसील में स्थित राजपूत बहुल ग्राम सुलताना जिला मुख्यालय से पूर्व में करीब 27 किमी दूर व तहसील मुख्यालय चिड़ावा से दक्षिण में 11 किमी दूर है। करीब 4 किमी वर्ग क्षेत्र से भी अधिक में फैले सुलताना के चारों ओर आवागमन हेतु सड़कें हैं। प्रत्येक एक घंटे से झुंझुनूं की ओर जाने हेतु तथा चिड़ावा के लिए हर 20 मिनट बाद बसें उपलब्ध हैं। राजधानी जयपुर के लिए भी गांव से खूब बसें उपलब्ध हैं। करीब 700 वर्ष पुराने सुलताना गांव को महाराव श्री शेखाजी के वंशज झुंझुनू के शासक श्री सार्दुलसिंह जी के बड़े पुत्र श्री जोरावरसिंह जी के पुत्र श्री हाथीसिंह जी ने अपने पिता के साथ युद्ध में नवाब खाजू खां को परास्त कर अपने अधिकार में कर लिया। तब से ही गांव का नाम हाथीसिंह जी का सुलताना है। नरहड़ के नवाब के अधीन सुलताना था तथा उसी का वंशज खाजू खां सुलताना का नवाब था। बंटवारे में सुलताना तथा इसके साथ 12 गांव हाथीसिंह जी के हिस्से में आए। उस समय सुलताना दो भागो में बंटा था, एक हिस्सा खेतड़ी के सिंघाणा परगने के नीचे तथा दूसरा नरहड़ के अधीन था। जिसे हाथीसिंह जी ने मिलाकर एक किया। हाथीसिंह शक्तिशाली व वीर थे। उन्होंने अनेकों युद्धों में भाग लिया था जिनमें उनके द्वारा लड़ा गया माण्डण का युद्ध इतिहास प्रसिद्ध है। गांव के बीच में हाथीसिंह द्वारा निर्मित गोपीनाथ जी का मंदिर प्रसिद्ध है। वर्तमान में सुलताना में हाथीसिंह जी के पांच पुत्रों के वंशज निवास कर रहे हैं, जो पांच पाना (स्वरूपसिंह जी का पाना, चांदसिंह जी का पाना, अभयसिंह जी पाना, भानीसिंह जी पाना व भोमसिंह जी का पाना) कहलाते हैं। हाथीसिंह के वंशज अपने हिस्से के अनुसार गांव रूपाली, भोड़की, घोड़ीवारा, उदावास, छऊ व इण्डाली में भी निवास कर रहे हैं। सुलताना के मुख्य बाजार में हाथीसिंह जी की घोड़े पर सवार भव्य व विशाल मूर्ति भी निर्मित है। शेखावाटी क्षेत्र का सुलताना राजपूतों का बड़ा गांव है। सुलताना में राजपूतों के 1200-1300 घर हैं। सुलताना की जनसंख्या करीब 22000 है तथा सबसे ज्यादा मुसलमानों की व दूसरे नम्बर पर राजपूतों की संख्या है। मुस्लिम, राजपूत, ब्राह्मण, जाट, मीणा, माली, कुम्हार, मेघवाल, हरिजन, नाई आदि सभी 30-35 जातियां निवास करती हैं। सुलताना ग्राम विकास की ओर अग्रसर है। सुलताना में लोहे की अलमारियां, बक्से, तवी, कड़ाई आदि सामान बनकर अन्य स्थानों पर जाता है। लोहे के व्यापार के लिए सुलताना दूर दराज क्षेत्र में प्रसिद्ध है। बिल्डिंग मैटेरियल व आवश्यकताओं का अन्य सभी सामान सुलताना की दुकानों में क्रय-विक्रय किया जाता है तथा आसपास के गांवों से लोग सामान ले जाते हैं। सुलताना में सैंकड़ों की तादाद में दुकानें हैं। शिक्षा के क्षेत्र में सुलताना अग्रसर है। यहां बालकों की सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय व बालिकाओं की उच्च माध्यमिक विद्यालय भी है। इसके अतिरिक्त प्राइवेट 42 स्कूले, मदरसे व 4 कॉलेज भी हैं। गांव के राजपूत परिवारों से सेना, नेवी, पुलिस व सिविल राज्य सरकारी नौकरी में भी अनेकों है। भरतसिंह बिग्रेडियर, सम्पतसिंह अमेरिका में वैज्ञानिक (इंजीनियरिंग क्षेत्र में) तथा शेरसिंह अतिरिक्त रजिस्ट्रार पद से सेवानिवृत हैं। प्राइवेट कम्पनियों में भी अनेकों है। इसके अतिरिक्त ट्यूबवैल लगाकर खेती-बाड़ी के धंधे तथा कपड़ों के व्यापार में भी अनेकों लोग कार्यरत हैं। सुलताना गांव में बालकों व बालिकाओं के क्षत्रिय युवक संघ के शिविर भी लग चुके हैं। संघ प्रमुख श्री भगवानसिंह रोलसाहबसर भी गांव में दो बार पधार चुके हैं। उम्मेदसिंह सुलताना, वीरेन्द्रसिंह, खींवसिंह व करणीसिंह सुलताना श्री क्षत्रिय युवक संघ के सक्रिय स्वयंसेवक है। गांव में करणी माता, हनुमान जी, गणेश जी, गोगा जी आदि सभी देवी-देवताओं के 23-24 मंदिर व 10-12 मस्जिदें हैं। यहां धार्मिक सहिष्णुता है किसी प्रकार का जातीय भेदभाव नहीं है।

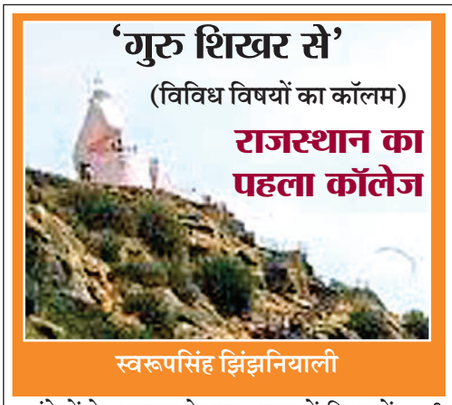

'गुरु शिखर से'

(विविध विषयों का कॉलम)

राजस्थान का पहला कॉलेज

स्वरूपसिंह झिंझनियाली

अंग्रेजों के आगमन के बाद भारत में शिक्षा में खूब परिवर्तन हुए। तात्तकालीन राजपूताना में अंग्रेजों ने अजमेर को यहां की राजधानी बनाया। 1836 में ईस्ट इण्डिया कंपनी के निदेशकों द्वारा राजपूताना का पहला अंग्रेजी स्कूल खोला गया। इसका भवन 'ब्लू केशल' कहलाता था। यही स्कूल आगे चलकर 'जी.सी.ए.' के नाम से भारत भर में प्रसिद्ध कॉलेज बना। जी.सी.ए. अर्थात् गवर्नमेन्ट कॉलेज अजमेर। प्रसिद्ध किले तारागढ की तलहटी में वर्तमान ब्यावर रोड पर 17 फरवरी 1868 को राजपूताना के तात्कालीन एजेन्ट टू द गवर्नर जनरल किटिंग द्वारा वर्तमान भवन की नींव रखी गई और इस कॉलेज में इंटर मीडियेट की पढ़ाई प्रारम्भ हुई। आर्ट्स (कला) में 1896 में डिग्री कक्षाएं प्रारम्भ की गई। प्रारम्भ में यह कॉलेज कलकत्ता और बाद में इलाहाबाद विश्वविद्यालयों से संबद्ध रहा। 1886 में यह आगरा विश्वविद्यालय में शामिल कर लिया गया। 1956 में अजमेर मेरवाड़ा के राजस्थान में शामिल होने पर राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर (1947) एवं 1987 में महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय अजमेर बनने पर उससे संबद्ध है। यह राजस्थान का पहला सरकारी कॉलेज है जहां भौतिकी, रसायन, प्राणी शास्त्र, वनस्पति शास्त्र, कॉमर्स, अंग्रेजी, संस्कृत, हिन्दी, इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, भूगोल विषयों में स्नातकोत्तर के साथ-साथ रिसर्च की शिक्षा सुविधा उपलब्ध है। यहां शिक्षा के अतिरिक्त यहां की खेलकूद, सांस्कृतिक प्रोग्राम, एन.सी.सी. आदि गतिविधियां देश भर में सराही जाती हैं। यहां के पढ़े विद्यार्थियों ने देश-विदेश में विभिन्न क्षेत्रों में अपना तथा प्रदेश का नाम रोशन किया है। अन्तरराष्ट्रीय न्यायालय हेग (स्वीट्जरलैण्ड) में मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति स्वर्गीय डॉ. नगेन्द्र सिंह डूंगरपुर यहां के विद्यार्थी रहे हैं। नब्बे के दशक में इस कॉलेज के छात्रावास में रहने वाले छात्रों ने छात्रावास का नाम अपने स्तर पर पृथ्वीराज चौहान छात्रावास रख दिया था। राजस्थान के इस पहले एवं प्रसिद्ध कॉलेज का नाम वर्तमान राजस्थान सरकार ने 'सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय' रख दिया है।

(पृष्ठ एक का शेष) **जो अंकुरण...** कर्तव्य और उत्तरदायित्व किस प्रकार ग्रहण किए जाते हैं यह मैंने इस शिविर में आप लोगों के व्यवहार से महसूस किया है, यदि आप सभी का सहयोग इसी प्रकार बना रहा तो बहुत कुछ संभव है। इस बात को सदैव याद रखें कि संसार को आपकी बहुत आवश्यकता है, हमारे पूर्वजों ने सदैव उत्सर्ग का मार्ग पढ़ाया है उसे भूल मत जाना। पूज्य तनसिंह जी की चाह थी 'चलता रहे मेरा संघ' और यही भाव इन दिनों में आप में पनपा है उसे बनाए रखें। आपने जो संघ के बंधन स्वीकार किए हैं वे आपको कहीं जाने नहीं देंगे, भटकने नहीं देंगे क्यों कि हमारी तस्वीरें पूज्य तनसिंह जी के आगोश में पड़ी हैं। हमारा जीवन हमारे लिए नहीं है यदि हमने इसे हमारे लिए मान लिया तो संसार का क्या होगा? इसलिए हमारे दिल में एक टीस उठनी चाहिए। विदाई के इन क्षणों में आंसू नहीं अंगारे लेकर जाएं और 'चलता रहे मेरा संघ' यह मंत्र हमारे अंतर में सदैव गूंजता रहे। पूज्य तनसिंह जी ने हमें विदाई गीत में संदेश दिया, 'जीवो रे भाईडां जीवो रे' लेकिन जीकर क्या करें, यह समझने की बात है, यही हमने यहां महसूस किया है। जो जीवन आपने यहां जीया वह सब लोगों को नसीब नहीं होता, संभवतः आपको अहसास नहीं है लेकिन मैं अनुभव कर रहा हूं कि इससे बेहतर कोई स्थान नहीं है, जीवन का कोई मार्ग नहीं जो दिखाई दे, हो सके तो मेरे ये भाव लेते जाना।

पर्यायवाची... उस हृदयस्थ ईश्वर के उपासक सभी मनुष्य हिन्दू हैं। कालांतर में विगत दो ढाई हजार वर्षों से प्रचालित स्मृतियों एवं पुराणों में जीवन यापन की शैली एवं सामाजिक व्यवस्था को ही धर्म मान लिया गया और इसी का परिणाम है कि हृदयस्थ ईश्वर के परिचायक शब्द हिन्दू को जीवन शैली मान लिया गया। यदि यह मान लें कि हिन्दू कोई धर्म नहीं है तो फिर परिणामतः भारत के अधिसंख्य लोग जो अपने आपको हिन्दू कहते हैं वे तो धर्म विहीन हो जाएंगे। ऐसे में यह सब धर्म के नाम पर फैली भ्रांतियों एवं समाज में अपनी सत्ता को कायम रखने के लिए उन भ्रांतियों को बनाए रखने के प्रयासों का परिणाम है कि आज सामाजिक व्यवस्थाओं को धर्म मान लिया गया है जबकि सामाजिक व्यवस्थाएं समय के साथ परिवर्तनीय होती हैं जबकि धर्म अपरिवर्तनीय होता है। धर्म के सही स्वरूप को समझने के लिए भगवान श्री कृष्ण द्वारा प्रदत्त गीता का सहारा लेना चाहिए और भगवान के संदेश को यथार्थ रूप में यथार्थ गीता में प्रस्तुत किया गया है। स्वामी जी के निर्देश पर माननीय संघ प्रमुख श्री उच्च प्रशिक्षण शिविर के बीच में नई दिल्ली पधारे एवं इस कार्यक्रम में शामिल हुए।

विभिन्न प्रांतों में प्रांतीय मिलन

उच्च प्रशिक्षण शिविर पुष्कर में मिले निर्देशानुसार आगामी 10 व 11 जून को भारतीय ग्राम्य आलोकायन आश्रम बाड़मेर में आयोज्य कार्य योजना शिविर की तैयारी हेतु 27 व 28 मई को विभिन्न प्रांतों में प्रांतीय मिलन रखे गए। प्रांतों के सक्रिय स्वयंसेवकों को बुलाकर दायित्वों का बंटवारा किया गया। प्रांतों को मंडलों में विभक्त कर मंडल प्रमुख तय किए गए एवं प्रांत में वर्ष भर के संघ कार्य में सहयोग करने हेतु प्रांतीय सहयोगी बनाए गए। माननीय संघ प्रमुख श्री का स्पष्ट निर्देश था कि प्रत्येक स्वयंसेवक के पास कुछ न कुछ दायित्व होना चाहिए। इसकी अनुपालना में प्रांतीय मिलनों में आए स्वयंसेवकों को उत्तरदायित्व दिया गया एवं जो किसी कारण वश नहीं पहुंच पाए उनसे फोन द्वारा सम्पर्क किया गया। 27 मई को बाड़मेर शहर प्रांत का प्रांत मिलन प्रांत प्रमुख महिपालसिंह चूली के निर्देशन में हुआ जिसमें संभाग प्रमुख रामसिंह माडपुरा भी उपस्थित रहे। 27 मई को ही पाली, रानी व फालना प्रांत का प्रांतीय मिलन भैंसाणा में हुआ जिसमें पाली प्रांत प्रमुख महाब्बतसिंह धींगाणा व रानी फालना प्रांत प्रमुख हीरसिंह लोडता ने केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा के निर्देशन में कार्य योजना बनाई। 27 को ही बनासकांठा प्रांत का प्रांतीय मिलन थराद में प्रांत प्रमुख डूंगरसिंह चारड़ा के निर्देशन में हुआ। 27 मई को सिरोही प्रांत का प्रांतमिलन आदर्श नगर सिरोही में प्रांत प्रमुख सुमेरसिंह उथमण के निर्देशन में एवं सायला भीनमाल प्रांत का प्रांत मिलन दूदवा में प्रांत प्रमुख नाहरसिंह जाखड़ी व संभाग प्रमुख अर्जुनसिंह देलदरी के निर्देशन में हुआ। 28 मई रविवार को बाड़मेर संभाग के चौहटन प्रांत का मिलन हुआ जिसमें प्रांत प्रमुख उदयसिंह देदुसर ने संभाग प्रमुख रामसिंह माडपुरा के निर्देशन में कार्ययोजना बनाई। बाड़मेर संभाग के ही बालोतरा प्रांत का प्रांत मिलन हाउसिंग बोर्ड बालोतरा में प्रांत प्रमुख राणसिंह टापरा व पूर्व प्रांत प्रमुख मूलसिंह काठाड़ी के निर्देशन में हुआ। शेरगढ़ प्रांत का प्रांत मिलन 28 मई को बालेसर में प्रांत प्रमुख चन्द्रवीरसिंह भाळू व संभाग प्रमुख महेन्द्रसिंह गुजरावास के निर्देशन में हुआ व शेखावटी प्रांत का मिलन प्रांत प्रमुख जुगराजसिंह जुलियासर व पूर्व प्रांत प्रमुख गौरीशंकर दीपपुरा के निर्देशन में हुआ। नागौर संभाग के प्रांत लाडनूं का प्रांत मिलन संभाग प्रमुख शिभूसिंह आसरवा व प्रांत प्रमुख विक्रमसिंह ढींगसरी के निर्देशन में लाडनूं में हुआ। सभी जगह सक्रिय स्वयंसेवक पहुंचे एवं प्रांत की वर्षभर की कार्ययोजना बनाई। गोहिलवाड़ संभाग के मोरचंद प्रांत का प्रांत मिलन देवु भा मोरचंद की वाडी में 28 मई को हुआ। संभाग प्रमुख धर्मेन्द्रसिंह आंबली एवं शाखा कार्यालय प्रमुख छन्नुभा पच्छेगांव के निर्देशन में सभी ने अपनी योजना बनाई।

बालोतरा

मोरचंद

बालेसर

वागड़ क्षत्रिय महासभा का अनुकरणीय निर्णय

वागड़ क्षत्रिय महासभा ने बांसवाड़ा जिले में समाज के सार्वजनिक समारोहों में शराब के सेवन को प्रतिबंधित किया है। नियम तोड़ने वाले परिवारों के यहां होने वाले समारोहों में महासभा का कोई पदाधिकारी शामिल नहीं होगा एवं आवश्यक हुआ तो आर्थिक दण्ड भी लगाया जाएगा। महासभा ढाबों पर बैठकर शराब पीने पर भी पाबंदी लगाने की तैयारी कर रही है। इस हेतु महासभा गांव-गांव बैठकें कर निर्णय से अवगत करवा रही है एवं अनेक गांवों ने तो शराब पाबंदी संबंधी शपथ पत्र भी महासभा को सौंप दिए हैं। प्रताप जयंती समारोह में चर्चा कर डूंगरपुर में भी इस प्रकार का अभियान चलाने का विचार किया जा रहा है।

पृथ्वीराज जयंती मनाई

राजपूत सभा जयपुर के तत्वावधान में ज्येष्ठ मास की कृष्ण पक्ष की द्वादशी को सम्राट पृथ्वीराज चौहान की जयंती मनाई गई। माल्यार्पण, पुष्पांजलि एवं श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित किया गया। वक्ताओं ने सम्राट पृथ्वीराज के ऐतिहासिक जीवन चरित्र, वीरता, धनुर्विद्या में प्रवीणता, क्षमाशीलता आदि पक्षों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उनकी वीर गाथा एवं संघर्षशीलता वर्णन करते हुए उनकी वीर गाथा को सबके लिए गौरवमयी और प्रेरणादायी बताया गया। सभाध्यक्ष गिरिराजसिंह लोटवाड़ा ने सभी का आभार जताया।

(पृष्ठ एक का शेष) 'बालिका प्रशिक्षण शिविर चित्तौड़गढ़ में'

'श्रेष्ठ संतान के लिए पूर्व से हो तैयारी' : संस्कारों का जीवन में बहुत महत्त्व है, उनको जीवन में ढालने के लिए प्रारम्भ से ही अभ्यास आवश्यक है। श्रेष्ठ संतान प्राप्ति के लिए माता को गर्भ धारण के 3 वर्ष पूर्व से ही तैयारी करनी चाहिए। संस्कारों का अभ्यास स्वयं को करना पड़ता है और संघ उसके लिए उपयुक्त वातावरण उपलब्ध करवाता है। इस शिविर में यही किया जा रहा है। यहां आप विवाहित-अविवाहित व सभी उम्र की शिविरार्थी हैं। कालांतर में उम्र के अनुसार अलग-अलग शिविर भी लगाए जाएंगे। संसार में दो तरह के लोग होते हैं दैवी संपदा वाले एवं आसूरी संपदा वाले। संघ हमारे अंतर की दैवी सम्पदा को पनपाता है। काम, क्रोध आदि विकार सभी में होते हैं। मात्रा अलग-अलग हो सकती है। संघ धीरे-धीरे साधना द्वारा इनके रूपांतरण का मार्ग सिखाता है। बालिका शिविर में 26 मई को शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि हमारा समाज शक्ति का उपार्जन करता है। वह उपार्जित शक्ति संगठित हो देवत्व की ओर बढ़े यही संघ का प्रयास है। संघ जागरण का काम करता है और गृहणियों का जागृत होना बहुत आवश्यक है। संसार इन्हीं से बनता है। उन्हें माता, बहन, बहु, सास, ननद, भाभी आदि विभिन्न भूमिकाएं निभानी पड़ती हैं। जागृति के अभाव में इन संबंधों का ताना-बाना बिखर जाता है। शिविर में आने पर यह जागृति आनी चाहिए।

शिविर में स्नेह मिलन : चित्तौड़गढ़ में हुए ग्रीष्मकालीन बालिका शिविर में 26 मई को माननीय संघ प्रमुख श्री के सानिध्य में स्थानीय सहयोगियों एवं अभिभावकों का स्नेहमिलन रखा गया जिसमें वल्लभनगर विधायक रणधीरसिंह भिण्डर, चित्तौड़गढ़ विधायक चन्द्रभानसिंह आक्या भी उपस्थित रहे। माननीय संघ प्रमुख श्री ने कहा कि हमारे में शौर्य, तेज, धैर्य, दक्षता, दान एवं संघर्ष करने की क्षमता में कमी नहीं हुई लेकिन हमारा सातवां गुण ईश्वरीय भाव लुप्त हो गया और इसी कारण हम हमारे पूर्वजों द्वारा स्थापित प्रजापालन के आदर्शों से च्युत हुए। पूज्य तनसिंह जी ने आजादी के समय समाज की किंकर्तव्यविमूढ़ता को देखकर श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की जो अनवरत कर्मरत है। संस्कार निर्माण में माताओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है इसलिए संघ बालिका शिविर लगाता है। समाज का सहयोग एवं विश्वास प्रशंसनीय है और संघ इस हेतु समाज का कृतज्ञ है। उन्होंने कहा कि संघ कोई नया काम नहीं कर रहा है बल्कि हम जो हमारे अपनेपन को भूल गए हैं उसको याद करवा रहा है। विधायक रणधीरसिंह भिण्डर ने कहा कि संघ संस्कारित एवं संगठित होने की पाठशाला है। हमे इस मार्ग से क्षत्रियोचित गुण हासिल कर सभी समाजों की सेवा करनी चाहिए। विधायक चन्द्रभानसिंह आक्या ने संस्कार एवं संगठन की आवश्यकता पर बल देते हुए सबको साथ लेकर चलने पर बल दिया। डॉ. लक्ष्मी कंवर चूंडावत ने कहा कि संघ हमारे अंतर को सुरक्षित रखने का काम कर रहा है। सेवानिवृत्त अभियंता भगवतसिंह तंवर ने पूज्य तनसिंह जी के साहित्य के अध्ययन पर बल दिया। प्रारम्भ में वरिष्ठ स्वयंसेवक दुर्गासिंह रुद ने संघ का विस्तृत परिचय देते हुए समय के युगानुकूल सदुपयोग की बात कही। संचालन गंगासिंह साजियाली ने किया।

सहयोगी स्नेहमिलन

आत्म सुरक्षा का अभ्यास

संपादकीय

भीड़ के पीछे चलते नेता

नेता की परिभाषा करते हैंतो निकल कर आता है कि जो नेतृत्व करे वह नेता होता है। जो आगे चलता है एवं संसार को अपने आचरण के बल पर अपने पीछे चलने को मजबूर कर देता है वह नेता होता है। जो संसार को अपना अनुसरण करने को मजबूर करे वह नेता होता है। इसीलिए पीछे चलने वालों को अनुचर कहा जाता है अर्थात् जो आगे चलने वाले का अनुसरण करे। इस प्रकार सही अर्थों में नेता शब्द मार्गदर्शक के रूप में प्रयुक्त होता है। नेता मूल रूप से शिक्षक होता है जो अपने साथ चलने वाले लोगों को अपनी सोच के अनुरूप चला देता है। यह सब करने के लिए उसे अपने पीछे चलने वालों के जीवन को अपनी सोच के अनुरूप बनाना पड़ता है। इस प्रकार योग्य नेता योग्य मार्गदर्शक भी होता है। योग्य शिक्षक होता है और इससे आगे वह गुरु होता है। लेकिन आज के समय में नेता शब्द की यह परिभाषा लुप्त प्रायः हो गई है। आज योग्य नेता वह नहीं माना जाता जो भीड़ को अपनी सोच के अनुरूप चला दे बल्कि योग्य नेता उसे कहा जाता है जो भीड़ की नब्ज को टटोल कर उसकी सोच का प्रतिनिधि बन जाए। इस प्रकार आजकल का नेता अपने अनुयायियों के पीछे चलता है। वह वही करता है जो उसके अनुयायी पसंद करते हैं। आज भीड़ की मानसिकता को समझ कर उसके अनुरूप बात करने वाला अच्छा नेता बन जाता है। भीड़ की सोच को समझकर उसके अनुरूप बात करने वाला नेता श्रेष्ठ माना जाने लगा है इस प्रकार आजकल नेता अनुयायी तैयार नहीं करता बल्कि अनुयायी नेता तैयार करते हैं। आजकल अनुयायी नेता के आदर्शों के अनुरूप नहीं बदलते बल्कि नेता अनुयायियों की सोच के अनुरूप अपने आपको बनाता है। इस प्रकार आज का नेता मार्गदर्शक या शिक्षक की भूमिका से बहुत पीछे रह गया है क्यों कि वह सब करने के लिए आचरण की आवश्यकता होती है, तपस्या करनी पड़ती है, असाधारण धैर्य की आवश्यकता होती है और एक लंबे इंतजार के बाद भी सफलता-असफलता की चाह से निर्लेप होना पड़ता है और इतना जोखिम लेने का कोई क्यों तैयार हो? आजकल तो लोकतंत्र का जमाना है, बहुमत का जमाना है और नेता भी बहुमत से बनता है इसलिए जिनको नेता बनना होता है वे वही करते है जो अधिसंख्य लोगों को पसंद होता है। इसमें उचित-अनुचित और सही गलत का कोई लेना देना नहीं होता बस नेताओं को वह सब करना ही पसंद होता है जिसे अधिसंख्य लोग पसंद करते हैं या भीड़ पसंद करती है। इसीलिए तो कोई गरीबी हटाने के ठोस रोडमेप के अभाव में भी केवल गरीबी हटाओ के नारे के बल पर नेता बन जाता है तो कोई अच्छे दिनों के सपने दिखाकर नेता बन जाता है। कोई भ्रष्टाचार मिटाने के नारे के बल पर नेता बन जाता है तो कोई एक के बदले 10 सिर लाने के नारे के साथ। वास्तव में देखा जाए तब तो ये सब नेता नहीं होते लेकिन दुर्भाग्य से आजकल ऐसे ही लोगों को नेता माना जाता है और वे बहुमत की नब्ज को प्रभावित करने वाले नारों के बदले भाग्यविधाता बन जाते हैं। लेकिन जरा विश्लेषण करें तो पाएंगे कि क्या वे वास्तव में नेता होते हैं? वास्तव में तो वे लोग ऐसे लोग होते हैं जिनको येन-केन प्रकारेण भीड़ के आगे खड़ा रहना होता है, भीड़ इनके अस्तित्व की आवश्यक शर्त होती है इसलिए ये वह सब करते हैं जो भीड़ की पसंद होता है। रजनीश अपने एक प्रवचन में एक उदाहरण देते हैं कि मुल्ला नसीरुद्दीन एक गधे पर बैठे बाजार से जा रहे थे और गधा सरपट दौड़े जा रहा था। लोगों ने पूछा मुल्ला किधर जा रहे हो तो उनका जवाब था कि यह सब गधे से पूछो। मैं तो बस केवल अपने इस अहंकार की तुष्टि के लिए ऊपर बैठा हूं कि मैं इसका मालिक हूं। यदि रोकूगा तो यह अड़ जाएगा और लोगों के सामने मेरा अहंकार आहत होगा। इसलिए मैंने तो इसे खुला छोड़ दिया जिधर चाहे उधर दौड़े बस मुझे ऊपर बिठाए रखे। हमारे आजकल के नेता भी इसी मनोवृत्ति के हैं। वे बस आगे खड़ा रहना चाहते हैं और उसके लिए वह सब करते हैं जो भीड़ चाहती है। इनका उद्देश्य भीड़ का मार्गदर्शन करना नहीं है, उसका शिक्षण करना नहीं है बल्कि बस मात्र नेता बने रहना है और आजकल कुशल नेता वही है जो ऐसा कर पाता है। लेकिन यह सदैव नहीं हो पाता। भीड़ सदैव पीछे नहीं रह पाती। जब कभी उसकी किसी चाह को आवाज देने वाला कोई दूसरा मिल जाता है तो वह बड़ी बेरहमी से अपने आगे चलने वाले लोगों का स्थानापन्न कर दिया करती है। इसके भी उदाहरण वर्तमान परिदृश्य में चहुंओर उपलब्ध है। इसी का परिणाम है कि 30 प्रतिशत वोट शेयर करने के बाद पूर्ण बहुमत की सरकार बनाने वालीं मायावती की बसपा लोकसभा चुनाव में उत्तरप्रदेश में साफ हो गई। पूर्ण बहुमत के साथ दिल्ली में सत्तासीन हुई आप आज अस्तित्व के संकट से जूझ रही है। साथ ही यह बात भी पूरी तरह सही नहीं है कि भीड़ की मनोदशा देखकर चलने वाला ही सदैव नेतृत्व करता है। भारत का सिनेमा जगत इस बात का बड़ा जोर-शोर से प्रचार करता था कि सिनेमा में परोसी जाने वाली अश्लीलता जनता की मांग है लेकिन अभी हाल ही में आशातीत सफलता को प्राप्त फिल्में बाहुबली व दंगल ने इस धारणा को झुठलाया है। इसलिए यह स्पष्ट है कि भीड़ की मानसिकता या पसंद की दुहाई देने वाले लोग केवल अपना स्वार्थ सिद्ध करने को उसके आगे चलने का प्रयास करते हैं और भीड़ की मानसिकता के कारण आंशिक रूप से सफल भी हो जाते हैं लेकिन वास्तव में तो जनमानस मानवता को आगे बढ़ाने वाले मूल्यों को ही पसंद करता है लेकिन उसकी उस पसंद को उभारने और आगे ले जाने के लिए जिस धैर्य, तपस्या और आचरण की आवश्यकता होती है उसका इन तथाकथित नेताओं में सर्वथा अभाव है। हमारे पूर्वजों ने युगों तक इस धैर्य, त्याग, तपस्या और आचरण को सहेजे रखा इसलिए उनके नेतृत्व में भारतवर्ष विश्व गुरु की उपाधि से सुशोभित हुआ लेकिन कालांतर में पश्चिम की अर्ध सम्भताओं की चकाचौंध में हम भी उस स्थान से च्युत हो गए और उसी का परिणाम हमें हमारे चारों ओर दृष्टिगोचर हो रहा है।

मार्गदर्शक पदचिह्न

भावनाएं सदैव रही कर्त्तव्य की दासी

हमारे पूर्वज जिस पथ के पथिक थे वहां भावनाएं सदैव कर्तव्य की दासी ही रहा करती थीं। भावनाएं उपेक्षित रहती थी ऐसा तो नहीं कहा जा सकता, लेकिन उनको भी यथोचित सम्मान मिला करता था लेकिन जब भी भावना और कर्तव्य के बीच चयन का अवसर आता था भावनाएं प्राथमिकता से पीछे हट जाया करती थी और कर्तव्य प्रधान स्थान पाता था। इतिहास में अनेकों ऐसे उदाहरण भरे पड़े हैं और यह कहा जाए कि हर घटना इसका उदाहरण है तो भी अतिशयोक्ति नहीं होगी। ऐसी ही घटना है मांडण युद्ध में खेत रहे भैरूसिंह शेखावत की जो झुंझुनूं जिले के बजावा गांव के निवासी थे एवं भुवांणा गांव के तंवरों के यहां शादी की थी। विवाह करके लौटते समय गांव में प्रवेश से पहले ही पता चला कि रेवाड़ी के पास मांडण नामक स्थान पर शाही सेना व शेखावतों के बीच युद्ध होने वाला है। नवविवाहित युवक अपनी नवविवाहिता पत्नी को गांव की सीमा पर बारातियों के साथ छोड़कर सिंघाणा पहुंचा और युद्ध के लिए प्रयाण कर रही शेखावत सेना में शामिल हो गया। 6 जून 1775 को मांडण नामक स्थान पर भयंकर युद्ध हुआ और युद्ध में अपने अनेक साथियों सहित भैरूसिंह भी वीरगति को प्राप्त हुए। उधर उनकी पत्नी तंवर जी ने श्वसुर गृह में अकेले ही प्रवेश तो किया लेकिन बारात के लौटने पर होने वाले पैसारा आदि मांगलिक कार्य अधूरे ही रहे। सांडणी (ऊंटनी) सवार वीरगति प्राप्त भैरूसिंह की पाग लेकर गांव पहुंचा तब नवविवाहिता तंवर जी ने कर्तव्य का दूसरा अध्याय पूरा करने के लिए पाग के साथ चितारोहण किया। बजावा गांव वाले आज भी नववधु के गृह प्रवेश के समय किए जाने वाले पैसारा आदि मांगलिक कार्य नहीं करते एवं वरवधु जाकर सती की छत्री पर श्रद्धासुमन चढ़ाते हैं। अब हमारे सामने यह प्रश्न उठ सकता है कि आज तो ऐसी कोई परिस्थिति नहीं है फिर इस घटना को कैसे वर्तमान से जोड़ें तो जरा गंभीरता से विचार करेंगे तो पाएंगे कि यदि हमारे अंतर में संघर्ष का सूत्रपात हुआ है तो पल-पल पर इस प्रकार के चयन का अवसर उपलब्ध होता है। हर बार हमारे सामने हमें हमारी भावनाओं, अहंकार एवं अस्तित्व के अहसास से जूझना पड़ता है और अनेक बार हम हारते जाते हैं। ➡ (शेष पृष्ठ 6 पर)

खरी-खरी

'द ग्रेट चमार'

उत्तर प्रदेश के सहारनपुर में जातीय हिंसा के नाम पर फैली अराजकता में एक शब्द निकल कर आ रहा है 'द ग्रेट चमार'। मीडिया वाले लिख रहे हैं कि एक गांव के बाहर लगे एक बोर्ड पर लिखे 'द ग्रेट चमार' वाक्य पर लोगों को एतराज था। वैसे तो यह बात कम समझ में आती है कि ऐसा कोई एतराज हो सकता है लेकिन यदि था तो गलत था क्यों कि यह तो शुभ संकेत ही माना जाना चाहिए कि तथाकथित चमार अपनी जाति को स्वाभिमान सूचक मान रहे हैं, कम से कम वे स्वाभिमान ढूंढने के लिए किसी अन्य के बाप-दादों को अपना तो नहीं बता रहे। हर व्यक्ति स्वाभिमान के साथ जीना चाहता है और उसके लिए वह अपनी जड़ों में लौटने के साथ प्रचलित मान सम्मान का भी उपयोग करना चाहता है। ऐसे में सेवा जैसे पुनीत कार्य को करने वाले अपना सम्मान उसी नाम में ढूंढते हैं तो ऐतराज क्यों होना चाहिए? वास्तव में तो सेवा का काम ही महान होता है और ऐसे में सेवा करने वाले स्वतः महान हो गए। वे यदि अपनी जाति के नाम के साथ महान लगाते हों तो एतराज करना किसी भी दृष्टिकोण से सही तो नहीं माना जा सकता। हालांकि सहारनपुर का क्या सच है यह अलग विषय है? जो दिखाया जा रहा है, बताया जा रहा है वही सच हो ऐसी संभावना न्यून ही है। अनेक सूत्र जुड़ते जा रहे हैं और उन सूत्रों के आधार पर अलग-अलग अंदाज लगाए जा रहे हैं और हमें खलनायक के रूप में पेश कर स्वार्थी बुद्धि अपना स्वार्थ सिद्ध करने में लगी है जैसा अखलाक मामले में हमें आगे कर किया गया। लेकिन इस वास्तविकता को तो कैसे नजरअंदाज किया जा सकता है कि हमारे समाज के अनेक अति उत्साही लोग अपनी कम समझ के फेर में ऐसी गलतियां कर ही देते हैं जो हमारे पर अंगुली उठाने को पर्याप्त होती हैं। समाचार पत्रों पर एक तरफ तो किसी दलित का विवाह करवाने, उसे सम्मान देने के समाचार छपते हैं तो दूसरी तरफ घोड़ी पर न बैठने देने जैसे समाचार भी छपते हैं। हम अपने अति उत्साह के कारण कहीं न कहीं मोहरे बन जाते हैं और लोगों के स्वार्थ सधते जाते हैं। किसी का असम्मान करना या उसके स्वाभिमान को ठेस पहुंचाना तो कभी हमारी फितरत नहीं रही। ➡ (शेष पृष्ठ 6 पर)

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	विशेष शिविर (कार्य योजना शिविर)	10.06.2017 से 11.06.2017	भारतीय ग्राम्य अलोकायन ट्रस्ट आश्रम, बाड़मेर। प्रांत प्रमुख, सह प्रांत प्रमुख व ऊपर के सहयोगी तथा संस्था प्रभारियों के लिए है। 10 जून को प्रातः 4 बजे तक पहुंचना है।

दीपसिंह बेण्यांकाबास, शिविर कार्यालय प्रमुख

द्वितीय पुण्यतिथि पर अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

ठकुरानी श्रीमती चांद कंवर राजावत

स्वर्गवास : 5 जून 2015

श्रद्धान्वित : ठा. भवानीसिंह (पति), सत्वेन्द्रसिंह, हिम्मतसिंह, रघुवीरसिंह (पुत्र), दातारकंवर, सुशीला कंवर, पुष्पा कंवर (पुत्र-वधु) एवं समस्त परिवारजन, पीलोदा, जिला अजमेर।

विशेषज्ञ वार्ता

व्यक्तित्व विकास के आयाम

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक पवनसिंह बिखरणिया ने कम्प्यूटर साइन्स में डिग्री लेकर दस वर्षों तक अमेरिका में साफ्टवेयर डवलपमेंट का काम किया। वहां से लौटकर अपनी सॉफ्टवेयर कंपनी बनाई एवं विगत 5 वर्षों में पूना में रहकर अपनी कंपनी चलाते हैं। साथ ही बड़े औद्योगिक प्रतिष्ठानों में व्यापार बढ़ाने एवं कर्मचारियों की सोफ्ट स्किल्स (Communication & Growth) बढ़ाने के लिए सलाहकार का काम करते हैं। विगत वर्षों में पवनसिंह ने हमारे समाज के सैंकड़ों युवाओं का इंजीनियरिंग करने के बाद अपने पास पूना में रखकर मार्गदर्शन किया है एवं उनका विभिन्न कंपनियों में प्लेसमेंट करवाया है। इस बार विशेषज्ञ वार्ता में प्रस्तुत है पवनसिंह बिखरणिया के विचार-

रोजगार हमारे देश, समाज एवं परिवार की अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है। इस अर्थ प्रधान युग में माता-पिता की अपने बच्चों से बड़ी-बड़ी अपेक्षाएं होती हैं और इसके लिए वे अपनी कमाई का पाई-पाई जोड़कर स्वयं के खर्चों की कटौती कर बच्चों को अच्छी से अच्छी आधुनिक शिक्षा दिलवाते हैं। भारी मात्रा में डोनेशन एवं फीस देते हैं। इसी कारण उनकी अपेक्षाएं भी अपने बच्चों से बढ़ जाती हैं लेकिन शिक्षा पूरी होने पर इन नौजवानों को जब उपयुक्त रोजगार नहीं मिलता तो कुंठाएं एवं निराशा पनपती है। अनेक युवक तो जीवन को अंधकारमय मानकर अपराध जगत का सहारा ले असामाजिक कार्यों में लिप्त हो जाते हैं। इससे भी ज्यादा निराश उनके माता-पिता होते हैं और इसके लिए वे बच्चों के आलस्य, प्रमाद, कम परिश्रम को दोषी मानकर और अधिक निराशा उपजाते हैं। इस समस्या का निजात है उचित मार्गदर्शन। इस हेतु समाधान के रूप में युवकों में निम्न क्षमताओं का विकास होना आवश्यक है।

1. Communication Skills (संवाद की क्षमता) : वर्तमान में निजीकरण और ग्लोबलाईजेशन के युग में व्यापार के आयाम बदल गए हैं। पूरा संसार कार्य क्षेत्र बन गया है ऐसे में बोलने की कुशलता महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कंपनियां उन युवकों को प्राथमिकता देती हैं जो दूसरे राज्यों और देशों में बैठे व्यापारियों एवं ग्राहकों से कुशलतापूर्वक बातचीत कर सकें। ऐसे में अंतरराष्ट्रीय भाषा का रूप ले चुकी अंग्रेजी को पढ़ना-लिखना और बोलना प्रथम आवश्यकता है। कम्युनिकेशन्स स्किल्स का दूसरा पहलू है, 'Non-Verbal Communication' हम बिना बोले ही हमारे शरीर के विभिन्न अंगों की हलचल, हावभाव एवं मनोभाव से लगातार कुछ न कुछ कम्युनिकेट करते रहते हैं। अतः Non Verbal Communication भी हमारी कम्युनिकेशन स्किल्स की शिक्षा का महत्त्वपूर्ण अंग है। Communication बढ़ाने के लिए विद्यार्थियों को चाहिए कि वे लगातार अंग्रेजी भाषा के समाचारों को विभिन्न रेडियो व टीवी चेनल्स पर सुने। अपने शब्द कोष को प्रतिदिन बढ़ाते रहें। इसके साथ-साथ सीखे हुए शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करने का लगातार प्रयास करें। अपने सहपाठी मित्रों का समूह बनाकर समूह चर्चा करें। जैसी भी आए टूटी-फूटी अंग्रेजी में ही बोलने का निरन्तर प्रयास करें। स्वयं का आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए आवश्यक है कि अपने शब्द कोष को अधिक से अधिक बढ़ाएं। अगर आप अकेले हैं तो दर्पण के सामने खड़े होकर बोलने का प्रयास करें। Non-Verbal कम्युनिकेशन बढ़ाने के लिए पहले यह जानना आवश्यक है कि शरीर के विभिन्न अंगों द्वारा Possitive और Negative ऊर्जा किन स्थितियों में निकलती है। उदाहरण के लिए यदि आप हाथ बांधकर खड़े हैं तो इसका अर्थ हुआ कि आप ज्ञान प्राप्त करने की मुद्रा में नहीं हैं। इस प्रकार की मुद्राओं की जानकारी के लिए स्वयं का व पुस्तकों का अध्ययन करें।

2. व्यक्तित्व विकास : प्रभावशाली व्यक्तित्व अर्जित करने का सूत्रबद्ध तरीका है। मिलने के वक्त अभिवादन करने का तरीका, बैठने, उठने व हाथ मिलाने का तरीका, आमने-सामने कुर्सी पर बैठने का तरीका आदि सभी आपके व्यक्तित्व को दर्शाते हैं। बातचीत करते समय नजरें चुराकर बात करना दर्शाता है कि आप अपनी जिम्मेदारियों का भली प्रकार निर्वहन नहीं कर पाएंगे। सामने वाले की बात समाप्त होने से पहले ही जवाब देने की जल्दी दर्शाता है कि आप धैर्यवान नहीं हैं। उचित समय का अंतराल देकर जवाब देना दर्शाता है कि आपने सामने वाले की बात को समझकर उस पर विचार कर-के जवाब दिया है। इसी प्रकार की अनेक परिस्थितियां पैदा करके आपकी बात करने की कला एवं आपके व्यक्तित्व के प्रदर्शन को मापा जाता है। अतः इस बारे में उचित मार्गदर्शन, तैयारी एवं अध्ययन आवश्यक है।

3. Listening Skills (सुनने की क्षमता) : बोलने की कला से भी महत्त्वपूर्ण है सुनने की कला। क्या है सुनने की कला, आइए समझने का प्रयास करें :

उत्तर वहीं दे जो पूछा गया है न कम न ज्यादा। सही उत्तर दें। अक्सर हम प्रश्न सुनते नहीं हैं, समझते नहीं हैं और उसका उत्तर दे डालते हैं, नतीजा होता है गलत उत्तर। हमारा Unconscius Mind प्रश्न को सुनते समय किसी ऐसे प्रश्न से Match कर लेता है जो हमने पहले कभी सुना है या देखा व पढ़ा है और हम उसका उत्तर दे देते हैं। इसी प्रकार हम कई बार प्रश्न सही सुनते हैं और उसका उत्तर भी सही देते हैं लेकिन उस उत्तर के साथ कई ऐसी बातें जोड़ देते हैं जिससे उत्तर की मुख्य बात छिप जाती है। उत्तर को अनावश्यक रूप से लंबा कर देने से सामने वाला व्यक्ति Irritate हो जाता है और कभी आपके रुकने का इंतजार करता है और कभी-कभी अपने आपको Switch off कर लेता है। एक बार Switch off होने के बाद वह आपका उत्तर सुनना बंद कर देता है। फिर चाहे आपका उत्तर कुछ भी हो। इस प्रकार की अनेक क्षमताएं है जो हमें अपने आप में विकसित करनी पड़ेगी अगर हमें आज के प्रतियोगी जमाने में अपने आप को स्थापित करना है तो फिर बात चाहे रोजगार की हो या स्वयं के व्यवसाय की। आजकल बड़ी-बड़ी कंपनियां, बड़े-बड़े शिक्षण संस्थान इन सभी गुणों का विकास करने के लिए बड़ी धनराशि खर्च करते हैं। और अधिक जानकारी के लिए आप PAVAN.RATHORE@ASCENT CYBER SOLUTIONS.COM आप पर सम्पर्क कर सकते हैं।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
कृष्णा नगर-I, लालकोठी स्कीम, जयपुर
मो. 9636977490, 0141-4015747
website : www.springboardindia.org

अलख नयन मंदिर
नेत्र संस्थान
अब आपकी सेवा में
आँखों से सम्बन्धित रोगों के निदान का विश्वसनीय केन्द्र
कैटरेक्ट एंड रिफ्रेक्टिव सर्जरी
रेटिना
ग्लूकोमा
भैंगापन
कॉन्टेक्ट लेंस क्लिनिक
कॉर्निया
बाल नेत्र चिकित्सा
आई बैंक व प्रत्यारोपण केन्द्र
सुपर स्पेशिलाइज एवं अनुभवी नेत्र विशेषज्ञ
डॉ. एल.एस. झाला
डॉ. विनीत आर्य
डॉ. शिवानी चौहान
डॉ. साकेत आर्य
डॉ. नितिश खतुरिया
डॉ. गर्व विश्नाई
शिक्षण (PG Ophthalmology) व (Hands-on) प्रशिक्षण संस्थान
निःशुल्क अति विशिष्ट नेत्र चिकित्सा (जरूरतमंद रोगियों के लिए फ्री आई केयर)

MEERA GIRLS SCHOOL, SIKAR
Fully Girls Residential English Medium Educational Institute
Admission Open Class Nursery to X th
Salient Features
* Spacious Campus of 10 acres with lush Green & Peaceful atmosphere.
* Dynamic & Dedicated Staff.
* Hostel Facilities.
* Very reasonable fee structure.
* Unique Teaching Methodology.
* Horse Ridding, Shooting, Swimming, Marshal Art.
* Advanced Co- curricular activities.
(A Unit of Durga Mahila Vikas Sansthan, Sikar)
Dhod Road, Bikaner by pass, Nathawatpura, Sikar (Raj.)
Ph. 01572-296512,
Mob. 9929048222, 9414052041, 9414243169, 9414211465

स्वतंत्रता एवं स्वाभिमान के प्रतीक की जयंती

दिल्ली

बाड़मेर

मूलाना (जैसलमेर)

मुम्बई

स्वतंत्रता एवं स्वाभिमान के अंतरराष्ट्रीय प्रतीक महाराणा प्रताप की 477वीं जयंती भारतीय तिथि अनुसार ज्येष्ठ शुक्ला तृतीया तदनुसार 28 मई को सम्पूर्ण राष्ट्र में विभिन्न संगठनों द्वारा कृतज्ञता पूर्वक मनाई गई। श्री क्षत्रिय युवक संघ के बाड़मेर प्रांत द्वारा राणी रुपादे संस्थान में कार्यक्रम रखा गया जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक कमलसिंह चूली, देवीसिंह माडपुरा, गोपालसिंह सुआला, राजेन्द्रसिंह भिंयाड़, महेन्द्रसिंह तारातरा आदि ने प्रताप के त्याग, बलिदान, शौर्य व स्वाभिमान को याद किया। जैसलमेर की मूलाना शाखा में संभाग प्रमुख गोपालसिंह रणधा के सानिध्य में जयंती मनाई गई। पोकरण के दयाल राजपूत छात्रावास में जयंती मनाई जिसमें संघ के पोकरण संभाग प्रमुख सांवलसिंह सनावड़ा, प्रांत प्रमुख अमरसिंह रामदेवरा, मदनसिंह राजमथाई, जीवनराजसिंह राजगढ़ आदि ने अपने विचार रखे। नई दिल्ली में संघ के स्वयंसेवकों ने प्रताप के स्मारक पर जयंती मनाई। गुजरात की पाडुसमा व भैसाणा शाखा में जयंती मनाई गई। मुंबई की शाखाओं ने 14 मई को जयंती मनाई। इसके अलावा भी संघ की सभी शाखाओं में प्रताप जयंती मनाए जाने के समाचार हैं। संघ के अलावा समाज के अन्य संगठनों ने भी जोर-शोर से प्रताप जयंती मनाई। प्रताप युवा शक्ति द्वारा पूना के जगदंबा माता मंदिर में बड़ा कार्यक्रम रखा गया जिसमें युवा शक्ति के संयोजक कुलदीपसिंह सिरसिला, मुंबई प्रांत प्रमुख नीरसिंह सिंधाणा, राजस्थान राजपूत परिषद मुंबई के संरक्षक रघुनाथसिंह सराणा आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। प्रताप युवा शक्ति के प्रदेश अध्यक्ष घनश्याम सिंह त्योद की अगुवाई में जयपुर में जयंती मनाई गई वहीं चौहटन में प्रताप युवा शक्ति की बाड़मेर इकाई द्वारा जयंती मनाई गई जिसमें जिलाध्यक्ष महेन्द्रसिंह चौहटन के अतिरिक्त माधवसिंह चाड़ी, संघ के चौहटन प्रांत प्रमुख उदयसिंह देदुसर सहित अनेक लोगों ने विचार रखे। पाली के रायपुर में महाराणा प्रताप स्मृति समिति रायपुर मारवाड़ के तत्वावधान में जयंती मनाई गई जिसमें सैंकड़ों समाजबंधु शामिल हुए। इस अवसर पर महाराणा प्रताप ट्रस्ट के अध्यक्ष शैतानसिंह, संघ के कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा, स्वामी समताराम, मानवजीत सिंह रायपुर आदि ने प्रताप के पदचिह्नों पर चलने का आह्वान किया। कच्छ के वर्मानगर में श्री क्षत्रिय युवक संघ एवं एकता विकास समिति के संयुक्त तत्वावधान में जयंती मनाई गई। जोधपुर में प्रताप जयंती आयोजन समिति के तत्वावधान में बीजेएस कॉलोनी स्थित शिवमंदिर में संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक नारायणसिंह माणकलाव, जेडीए चैयरमेन महेन्द्रसिंह राठौड़, मारवाड़ राजपूत सभा के अध्यक्ष हनुमानसिंह खांगटा आदि के आतिथ्य में जयंती मनाई गई एवं रैली निकाली गई। जेडीए अध्यक्ष ने जोधपुर शहर में महाराणा प्रताप की प्रतिभा लगवाने का आश्वासन दिया। गोगूंदा में राज्य के पंचायती राजमंत्री राजेन्द्रसिंह राठौड़ के आतिथ्य में जयंती मनाई गई। उदयपुर के टाउन हॉल में राव राजेन्द्रसिंह विधानसभा उपाध्यक्ष के आतिथ्य एवं गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया की अध्यक्षता में कार्यक्रम हुआ जिसमें राव राजेन्द्रसिंह ने राज्य स्तरीय समारोह के रूप में प्रताप जयंती मनाने की अपील की। अजमेर के महाराणा प्रताप स्मारक पर भी राव राजेन्द्रसिंह के आतिथ्य में विचार गोष्ठी रखी गई। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सहित अनेक राष्ट्रवादी संगठनों ने भी इस अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किए। मध्यप्रदेश में अनेक जगह समारोह पूर्वक प्रताप जयंती के समाचार मिले हैं। अनेक स्थानों पर ग्रिगेरियन कलेण्डर के अनुसार 9 मई को जयंती मनाई गई। इस प्रकार दोनों अवसरों को मिलाए तो भारत भर में स्वतः स्फूर्त रूप से राष्ट्रीय पर्व के रूप में प्रताप जयंती मनाई गई।

वर्मानगर गुजरात

जोधपुर

रायपुर (पाली)

पूना

(पृष्ठ चार का शेष)

द गेट...

इतिहास में अनेक ऐसे उदाहरण भरे पड़े हैं कि हमने तो दुश्मनों को भी उचित सम्मान दिया है ऐसे में अपनों को सम्मान देने में क्या ऐतराज लेकिन हमारा अहंकार भी किसी के स्वाभिमान को चोट पहुंचा कर ही अपना भोजन पाता है और उसी के चक्कर में हम युग के प्रतिकूल कृत्य कर बैठते हैं। ऐसा करने वाले किसी एक व्यक्ति का अहंकार हो सकता है इससे तुष्ट हो जाता हो लेकिन समग्र रूप से सामाजिक स्वाभिमान तो इससे आहत ही होता है। हम जिस जातीय गौरव के नाम पर ऐसा करते हैं वह वास्तव में गौरव का हनन करने वाला कृत्य होता है। आज भी जब समाचार पत्रों में किसी दलित को मंदिर में जाने से रोकने का कोई समाचार छपता है तब निश्चित रूप से प्रश्न उठता है कि आज के युग में जब अनेक महापुरुष धर्म की यथार्थ परिभाषा हमारे सामने प्रस्तुत कर चुके हैं उस दौर में भी हम अनपढ़ और गंवार लोगों को शासित कर अपने स्वार्थ सिद्ध करने के लिए मुट्ठी भर लोगों द्वारा दी गई परिभाषाओं में उलझे पड़े हैं। इन तथाकथित धर्मोपदेशकों का हमारे पर इतना गहरा असर हुआ है कि हम हमारे पूर्वजों के ईश्वरीय भाव के स्वभाव को भूल गए हैं और बार-बार प्रयास करने के बावजूद उस पर लौटना नहीं चाहते। हालांकि तथाकथित दलितों के प्रतिक्रियावादी लोगों का व्यवहार भी भड़काऊ ही होता है लेकिन हमें निश्चित रूप से सावधानी रखनी चाहिए एवं इस समझ के साथ सावधानी रखनी चाहिए कि जिस प्रकार ईश्वर अपनी समस्त संतानों पर समभाव रखकर यथोचित व्यवहार करता है हमारे लिए भी वही ईश्वरीय भाव वरणीय है क्यों कि यह हमारा स्वाभाविक गुण है। इसलिए खरी-खरी बात यही है कि हम अपना व्यक्तिगत अहंकार तुष्ट करने के लिए या किसी का स्वार्थ सिद्ध करने के लिए मोहरा बनने की अपेक्षा हमारे स्वाभाविक गुणों की तरफ प्रवाहमान होवें एवं ईश्वर की समस्त संतानों के स्वाभिमान का सम्मान करते हुए उसके रक्षण व परिवर्धन में सहयोगी बनें।

भावनाएं...

हमारी भावनाएं, हमारे स्वार्थ, हमारी बुद्धि एवं हमारी अपनी महत्त्वकांक्षा कर्तव्य के सामने डटकर खड़ी हो जाती है और हमारा अपना अस्तित्व हमारे कर्तव्य के सामने वाले पाले के तरफ जाकर चयन के इस अवसर पर गलती कर जाता है। ऐसे में भावनाएं जो कर्तव्य की दासी बननी चाहिए वे महत्त्व पाकर कर्तव्य को ही दास बना लेती हैं। ऐसे में इतिहास की ये घटनाएं हमारा मार्गदर्शन करती हैं कि क्षत्रियत्व में कर्तव्य ही महत्त्वपूर्ण होता है और उसी महत्ता के कारण क्षात्रवृत्ति जीवित रह सकती है। इसी मार्गदर्शन को चरितार्थ कर रहा है श्री क्षत्रिय युवक संघ जो हमारे अंतर में संघर्ष का आगाज कर उसमें कर्तव्य का पलड़ा भारी करने के लिए हमे तैयार करता है।

(पृष्ठ एक का शेष) (पुष्कर तीर्थ में हुआ....)

समझीं साधक की समस्याएं एवं निदान : श्री क्षत्रिय युवक संघ की साधना मूलतः व्यष्टि से परमेष्टि वाया समष्टि की साधना है। इस साधना में आने वाली सामान्य भौतिक समस्याओं का निदान साधक को स्वयं को करना पड़ता है ऐसा पूज्य तनसिंह जी का मानना था। लेकिन ज्यों ही वह अपनी भौतिक समस्याओं को सुलझाता हुआ साधना मार्ग पर कदम रखता है उसके सामने अनेक बौद्धिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक समस्याएं आ खड़ी होती है। इन सभी समस्याओं से निपटने में साधक को मार्गदर्शन एवं सहयोग की आवश्यकता होती है। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखकर पूज्य तनसिंह जी ने एक पुस्तक लिखी 'साधक की समस्याएं।' शिविर में बौद्धिक के समय एक दल को माननीय महावीरसिंह जी सरवड़ी इन समस्याओं एवं उनके निदान के बारे में इस पुस्तक के आलोक में समझाते थे। कार्य की प्रेरक शक्ति महत्त्वाकांक्षा किस प्रकार नासूर बन जाती है इस प्रथम अध्याय से लेकर अहंकार, साधन का हठ, रुढ़िगत साधना, बौद्धिक विकार, विज्ञान एवं दर्शन, श्रद्धा का भ्रम आदि विषयों पर साधना परक चर्चाएं हुई एवं शिविरार्थियों की शंकाओं व प्रश्नों का निराकारण किया गया।

बौद्धिक से समझा संघ दर्शन : शिविर में प्रतिदिन अपराह्न बौद्धिक सत्र होता जिसमें अलग-अलग शिक्षकों द्वारा अलग-अलग विषयों के माध्यम से संघ दर्शन समझाया गया। मानव जीवन के शाश्वत उद्देश्य सहित संघ के उद्देश्य, उस उद्देश्य की ओर बढ़ने के मार्ग एवं तत्संबंधी साधनों के बारे में विस्तार से समझाया गया। संघ के साधना मार्ग के उपयुक्त साधकों की योग्यताओं एवं साधना के महत्त्वपूर्ण साधन लोक संग्रह को भी विस्तार से समझाया गया। अनुशासन का वास्तविक अर्थ एवं उसका जीवन में महत्त्व, समाज की वर्तमान स्थिति, इतिहास का अंतरावलोकन, हमारी सांस्कृतिक विशेषताएं, उत्तरदायित्व निर्वहन की आवश्यकता एवं नेतृत्व विषय पर भी बौद्धिकों के माध्यम से पूज्य तनसिंह जी के दर्शन को समझाया गया।

मेरी साधना पर चर्चा : किसी भी क्षेत्र में अपने अस्तित्व का अहसास होने पर हर व्यक्ति के मन में एक चाह उत्पन्न होती है 'मैं भी कुछ करूं।' ऐसा ही संघ मार्ग पर भी होता है। मार्ग को लेकर उत्पन्न ऐसी चाह ही साधना मार्ग पर प्रवृत्त करती है। इसी चाह एवं साधना मार्ग को लेकर श्रद्धेय आयुवानसिंह जी ने एक पुस्तक लिखी 'मेरी साधना'। इस पुस्तक में इस चाह के उत्तरोत्तर उन्नत होने के सोपान वर्णित हैं। वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह सरवड़ी के नेतृत्व में इस पुस्तक पर सभी नए पुराने साधकों ने चर्चा की जिसमें इस चाह के कारण व्यक्ति की बहुविध चेष्टाओं, समाज की स्थिति, क्षात्र धर्म की महानता, मार्ग में बढ़ने में सहायक एवं बाधक प्रवृत्तियों, त्याग एवं बलिदान आदि से संबंधित अवतरणों पर विस्तार से चर्चा की गई एवं साधकों की शंकाओं का समाधान किया गया।

शिविर में यज्ञोपवित संस्कार

संघ दर्शन एवं पुस्तक विमोचन : शिविर के दौरान 19 मई को सहयोगियों के लिए संघ दर्शन कार्यक्रम रखा गया जिसमें शिविर की व्यवस्था में सहयोग करने वाले समाज बंधुओं ने शिविर की गतिविधियों का निकट से निरीक्षण कर संघ की कार्यप्रणाली को समझने का प्रयास किया। उपस्थित समाज बंधुओं को संबोधित करते हुए वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीरसिंह सरवड़ी ने कहा कि समाज में अनेक अभाव हैं। अनेक संस्थाएं भौतिक अभावों की पूर्ति में संलग्न हैं। संघ ऐसी सभी संस्थाओं का यथाशक्ति सहयोग करता है। साथ ही तीन बड़े अभाव महसूस कर उनकी पूर्ति में संलग्न है। ये तीन अभाव हैं- क्षात्र संस्कारों का अभाव, संगठन का अभाव एवं ईश्वरीय कृपा का अभाव। संघ अभ्यास एवं वैराग्य की प्रणाली द्वारा संस्कार निर्माण करता है एवं ऐसे संस्कारी लोगों का संगठन ही आदर्श संगठन होता है। संघ कार्य विश्वात्मा की मांग की पूर्ति का माध्यम है इसलिए स्वयं में एक उपासना है जो हमें ईश्वरीय कृपा का भागी बनाती है। इसी कार्यक्रम में संघ के स्वयंसेवक कर्नल हिम्मतसिंह पीह की पुस्तक 'स्वतंत्र भारत की क्षत्रिय प्रतिभाएं' का विमोचन किया गया। कर्नल हिम्मत सिंह ने पुस्तक का परिचय देते हुए बताया कि इस पुस्तक में आध्यात्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, सेना, खेल, प्रशासनिक सेवा, न्यायिक सेवा आदि क्षेत्रों में आजाद भारत की 400 क्षत्रिय प्रतिभाओं का वर्णन किया गया है। इस पुस्तक के लेखन का उद्देश्य ऐसी प्रतिभाओं के प्रति सम्मान एवं कृतज्ञता प्रकट करना तथा युवा पीढ़ी का पथ प्रदर्शन कहना है। उन्होंने कहा कि यह पुस्तक मुझ में स्थित संघ की प्रेरणा का परिणाम है। माननीय संघ प्रमुख श्री ने इस अवसर पर कहा कि कर्नल हिम्मत सिंह ने इस पुस्तक के माध्यम से विरासत संरक्षण का काम किया है और संघ भी यही करता है। कर्नल हिम्मतसिंह संघ के स्वयंसेवक हैं यह मेरे लिए प्रसन्नता का विषय है। इस पुस्तक में वर्तमान की प्रतिभाओं का वर्णन है जो आगे जाकर इतिहास बनेंगी। यह पुस्तक इतिहास के संरक्षण का प्रयास है, विरासत को आगे बढ़ाने का प्रयास है। उन्होंने समाज में व्याप्त निराशा की बात पर कहा कि गीता निराश अर्जुन के लिए कही गई है और आज हमारी स्थिति भी अर्जुन जैसी ही है इसलिए हमारे लिए सर्वश्रेष्ठ मार्गदर्शन गीता ही हो सकती है। पूज्य तनसिंह जी ने गीता को ही आधार बनाकर श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की थी। इस अवसर पर माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपस्थित सहयोगियों को यथार्थ गीता भेंट की एवं आद्योपात रूप से 4-5 बार पढ़ने का आग्रह किया।

तेरे सपनों में रंग, तेरे कष्टों में उमंग : प्रायः शिविरों में पूज्य तनसिंह जी की यह पंक्ति चरितार्थ होती ही रहती है। 21 मई को दोपहर बाद से ही वर्षा प्रारम्भ हो गई और चर्चा के समय बैठने वाला टेंट टपकने लगा। लेकिन शिविरार्थियों के लिए तो यह समय शिकायत का नहीं बल्कि आनंद का था। टेंट से बाहर आकर 'आ जा मौसमें बहार' शुरू हो गया। जेठ के महीने में सावन की सी झड़ी लग गई लेकिन कर्मयोगियों को कौन रोक सकता है? बरसते पानी में ही सब काम चलते रहे, खुले आसमान के नीचे मां भगवती की अर्चना भी हुई और फिर खुले आसमान तले ही टॉर्च की रोशनी से भोजन भी हुआ और आश्चर्य की बात यह कि इस विपरित परिस्थिति में भी भोजन की हमेशा जितनी मात्रा कम पड़ गई। बस यही कहा जा रहा था कि यह तो इन्द्र भगवान हमारा अभिषेक कर रहे हैं और हम आनंद पूर्वक स्वीकार कर रहे हैं। अभिषेक भी चलता रहा और आनंद भी। चर्चा के दौरान 5-6 लोगों की टोली तो तेज हवा के कारण बार-बार उखड़ने को आतुर टेंट को ही संभाले रखती थी। लेकिन कार्यक्रम सुचारू रूप से चलते रहे। अंतिम तीन-चार रातों में तो हर रोज रात को आंधी व बारिश की फुहारों से दो चार होना पड़ता लेकिन विश्राम में पड़ने वाले इस खलल का अगले दिन कार्यक्रमों में कोई असर दृष्टिगोचर नहीं होता। अपनेपन के मतवाले कष्टों में भी आनंद उठाते हैं क्यों कि अपनेपन का आनंद उन कष्टों को बहुत छोटा कर दिया करता है। इसी अपनेपन की खोज में पूरा संसार भटकता रहता है लेकिन यहां इस अपनेपन के झरने बहते हैं जिसमें नहाकर हर कोई गा उठता है 'संघ में लीला लहर छै।' जब इस प्रकार का अपनापन होता है तो खेलों में प्रतिस्पर्धा नहीं बल्कि कर्तव्य भाव होता है और इसी कर्तव्यभाव के कारण खेलों के मैदानों में हीरे-मोती मिलते हैं। वे हीरे-मोती जिनके बल पर जीवन गढ़ा जाता है और व्यक्तित्व में निखर आता है। यहां के खेल-खेल नहीं बल्कि प्रयोगशाला होते हैं जिनमें अनुशासन, ईमानदारी, आज्ञापालन आदि गुणों के प्रयोग किए जाते हैं ताकि इस कार्यशाला का कोई पत्थर अनगढ़ न रह जाए।

नए लोगों को उत्तरदायित्व : किसी भी दीर्घकालीन कार्य के लिए नई पीढ़ी को उत्तरदायित्व वहन करने के लिए तैयार करना आवश्यक है और फिर संघ तो पीढ़ियों तक चलने वाला कार्य है। इसलिए यहां पूज्य तनसिंह जी के समय से ही नए लोगों को उत्तरदायित्व सौंपने की प्रक्रिया चालू है। इसी प्रक्रिया के तहत इस बार उच्च प्रशिक्षण शिविर में माननीय संघ प्रमुख श्री के निर्देशन में संघ के संगठनात्मक स्वरूप में फेरबदल किया गया एवं नए लोगों को उत्तरदायित्व देकर भविष्य का नेतृत्व तैयार करने को लेकर गंभीर विचार विमर्श किया गया।

पूर्व छात्र समिति की हीरक जयंती

आजादी के बाद राजपूत समाज और विशेषकर मारवाड़ में शिक्षा का प्रमुख केन्द्र रहे चौपासनी विद्यालय के पूर्व छात्रों द्वारा गठित पूर्व छात्र समिति का हीरक जयंती समारोह 20 व 21 मई को विद्यालय परिसर में संपन्न हुआ। समारोह का उद्घाटन करते हुए पूर्व महाराजा गजसिंह ने कहा कि चौपासनी विद्यालय से पढ़कर निकले विद्यार्थियों ने देश-विदेश में हर क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित कर नाम रोशन किया। समारोह अध्यक्ष पूर्व आई.ए.एस. एवं पूर्व विद्यार्थी ओंकारसिंह बाकरा ने कहा कि यह विद्यालय हम सबके लिए तीर्थ है। उन्होंने कहा कि पूर्व में इस विद्यालय का नाम राजपूत स्कूल था, वह वापिस रखा जाना चाहिए। समारोह के योजनाकार एवं मुख्य संयोजक नारायणसिंह माणकलाव ने कहा कि इस समारोह का मुख्य उद्देश्य बिछुड़े हुए साथियों का मिलन था। चौपासनी शिक्षा समिति के अध्यक्ष सिद्धार्थसिंह रोहिट ने प्रजेंटेशन के जरिए विद्यालय की प्रगति की जानकारी दी। समारोह के दौरान हीरक जयंती समारोह 2017 की स्मारिका का विमोचन व पूर्व छात्र एवं डीआईजी (बीएसएफ) अर्जुनसिंह द्वारा तैयार की गई वेबसाइट का लोकार्पण किया गया। समारोह में 35 वर्षों से विद्यालय में कार्य कर रही आया प्रेमबाई को पूर्व छात्र राजेन्द्रसिंह रानियावास की ओर से 51 हजार रुपए भेंट किए गए।

पूर्व शिक्षको का किया सम्मान : समारोह में 1949 से सेवानिवृत्ति तक बेहतरीन सेवाएं देने वाले पूर्व प्रधानाध्यापक धौकलसिंह भंवराणी, जगन्नाथसिंह कालवा, फतेहसिंह थोब, समुन्द्रसिंह जोधा, राजसिंह आमला, रूपसिंह मण्डलावत व रमेशचन्द्र गौड़ का श्रीफल व शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया गया। धौंकलसिंह भंवराणी, जगन्नाथसिंह कालवा व रूपसिंह मण्डलावत का सम्मान उनके पुत्रों को दिया गया एवं मंच पर उनकी तस्वीर रखकर उन्हें याद किया गया। समारोह का 21 मई को अपराह्न 2 बजे पूर्व महारानी हेमलता राजे के आतिथ्य में समापन किया गया। इस दो दिवसीय मिलन समारोह के दौरान अनेक सत्र आयोजित कर विद्यालय के विकास पर चिंतन किया गया वहीं युवाओं से लेकर बुजुर्गों तक साथ रहे सहपाठियों से मिलकर लोगों ने अपने पुराने दिनों को याद किया। अनेक पूर्व विद्यार्थियों ने अपने विद्यार्थी जीवन के अनुभव साझा किए। उल्लेखनीय है कि इस विद्यालय से अनेक राजनीतिज्ञ, समाजसेवी, खिलाड़ी, सशस्त्र बलों के अधिकारी-कर्मचारी, वैज्ञानिक, प्रशासनिक अधिकारी-कर्मचारी आदि निकले है। यहां के विद्यार्थियों को अनेक सैनिक एवं नागरिक सम्मान मिले हैं।

भैरोंसिंह शेखावत स्मृति व्याख्यानमाला

जयपुर स्थित बिड़ला सभागार में विगत 15 मई को पूर्व उपराष्ट्रपति भैरोंसिंह शेखावत की पुण्यतिथि के अवसर पर उनकी स्मृति में प्रथम स्मृति व्याख्यानमाला आयोजित की गई। व्याख्यानमाला को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने भैरोंसिंह जी के योगदान एवं स्वयं के साथ मधुर संबंधों की चर्चा की। व्याख्यानमाला को राजस्थान के राज्यपाल कल्याणसिंह, पंजाब के राज्यपाल वीपी सिंह एवं पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने भी संबोधित किया। पंजाब के राज्यपाल वीपी सिंह ने जयपुर हवाई अड्डे का नाम शेखावत के नाम से करने का आग्रह किया वहीं राजस्थान के राज्यपाल कल्याणसिंह ने शेखावत को भारतीय राजनीति का दक्ष व परिपक्व राजनेता बताया। पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि भैरोंसिंह जी के पक्ष एवं विपक्ष सभी से अच्छे संबंध रहे। वे विपक्ष की बात ध्यान से सुनते थे जबकि वर्तमान में केन्द्र व राज्य दोनों में ऐसा नहीं होता। सिक्किम के मुख्यमंत्री पवन कुमार चामलिंग ने उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को प्रेरणा स्रोत बताया। इस अवसर पर सिक्किम के मुख्यमंत्री पवन कुमार चामलिंग को भैरोंसिंह शेखावत मेमोरियल लाईफ टाईम एचीवमेंट अवार्ड दिया गया।

मेवाड़ में आदर्श पहल : भीलवाड़ा जिले के दौलतगढ़ निवासी चन्द्रभानसिंह चुण्डावत ने अपने पुत्र शंकरदयाल सिंह के विवाह में टीका न लेकर एवं विवाह में दहेज संबंधी कोई मांग न कर आदर्श प्रस्तुत किया है। चन्द्रभानसिंह संघ के सहयोगी हैं एवं दौलतगढ़ राजपूत समाज के अध्यक्ष रहे हैं। दूल्हे एवं दुल्हन ने भी संघ के शिविर किए हैं।

प्रतिभाएं

जतन राठौड़ को मिला रजत : नागौर जिले की परबतसर तहसील के रूणीजा गांव निवासी जतनसिंह राठौड़ पुत्र शक्तिसिंह ने चेक गणराज्य में तिलजेव शहर में आयोजित नेशल शूटिंग प्रतियोगिता में भारत राष्ट्र का प्रतिनिधित्व किया। 24 व 25 मई को आयोजित इस प्रतियोगिता में जतन राठौड़ ने रजत पदक हासिल किया है।

निर्मल कंवर : संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक दीपसिंह बैण्यांकाबास की पौत्री एवं लक्ष्मणसिंह बैण्यांकाबास की पुत्री निर्मल कंवर ने सीबीएसई की 12वीं परीक्षा में कॉमर्स मैथ्स में 89 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्रा माहेश्वरी गर्ल्स पब्लिक स्कूल की छात्रा है एवं संघ की स्वयंसेविका है।

रिकु कंवर : नागौर जिले के छापड़ा गांव निवासी आसूसिंह छापड़ा की पुत्री रिकु कंवर ने 12वीं विज्ञान वर्ग में आरबीएसई से 87 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्रा दुर्गा महिला विकास संस्थान नाथावतपुरा (सीकर) में अध्ययनरत है।

दिव्या कंवर : दशरथसिंह लोरोली जिला नागौर की पुत्री दिव्या कंवर आरबीएसई की 12वीं विज्ञान की परीक्षा में 81 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। यह छात्रा भी दुर्गा महिला विकास संस्थान में अध्ययनरत है।

उर्मिला कंवर : दुर्गा महिला विकास संस्थान की छात्रा उर्मिला कंवर ने आरबीएसई की 12वीं विज्ञान की परीक्षा में 80 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्रा चुरू जिले के बामणिया गांव के नरपतसिंह की पुत्री है।

जेनता कंवर : नागौर जिले के भवादिया गांव के संपतसिंह की पुत्री जेनता कंवर ने भी 12वीं विज्ञान की परीक्षा आरबीएसई में 75 प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। छात्रा दुर्गा महिला विकास संस्थान में रहकर अध्ययनरत है।

हनुतसिंह : हनुतसिंह पुत्र योगेन्द्रसिंह ने केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा आयोजित 12वीं की परीक्षा में 94 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं। हनुतसिंह संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीरसिंह सरवड़ी के बड़े भ्राता बजरंगसिंह का पौत्र है। मेयो कॉलेज अजमेर का छात्र हनुवंतसिंह कॉलेज मॉनिटर के साथ-साथ सोसियल सर्विस कैप्टिन रहा है।

उच्च स्तरीय समिति के सदस्य निर्वाचित : केन्द्रीय मोटरयान अधिनियम 1989 में संशोधन ड्राफ्ट नियम बनाने के लिए सड़क परिवहन मंत्रालय की ओर से गठित उच्च स्तरीय समिति के सदस्य के रूप में तकनीकी सलाहकार वीरेन्द्रसिंह राठौड़ को सदस्य बनाया गया है। राजस्थान परिवहन विभाग में कार्यरत राठौड़ वर्तमान में केन्द्र में प्रतिनियुक्ति पर है।

रोजगार का सुनहरा अवसर

समुन्द्र किनारे वादियों के बीच बसे रमणीक नगर मैंगलोर (कर्नाटक) में होलसेल गोदाम पर कार्य करने के लिए ऊर्जावान, मेहनती व ईमानदार युवाओं की आवश्यकता है।

योग्यता : 10वीं पास, आयु : 20 वर्ष से अधिक
वेतन : 10000 से 15000 (योग्यतानुसार)
वर्ष में दो माह छुट्टियां एवं रहना-खाना फ्री

तुरन्त सम्पर्क करें : 919742011431, 919828381431

श्री सद्गुरु भगवान छात्रावास एवं कोचिंग सेंटर

एसबीआई बैंक के सामने, डीडवाना रोड़, कुचामन सिटी, नागौर (राज.)

- कक्षा 1 से 12 तक के विद्यार्थियों के आवास की सुंदर व्यवस्था
- अनुशासित एवं नियमित दिनचर्या
- पौष्टिक एवं सात्विक आहार
- कक्षा 6 से 12 तक कोचिंग सुविधा
- वरिष्ठ जनों का मार्गदर्शन

संपर्क सूत्र: नत्थुसिंह छापड़ा 7073305111, 9772097087

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org